अंतिम दिनों में चौकस रहने की अपील (2 तीमुथियुस 3)

''पर यह जान रख, कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे। ... पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखी हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था?'' (2 तीमुथियुस 3:1, 14)।

पौलुस विश्वास में अपने पुत्र, तीमुथियुस के नाम की दूसरी पत्री परीक्षा की घड़ी में भी स्थिर बने रहने के अनुरोध के साथ आरम्भ करता है (अध्याय 1)। इस ''बुज़ुर्ग सिपाही'' ने तीमुथियुस से उस शिक्षा को जो उसने विश्वासयोग्य शिक्षकों से पाई थी, फैलाने और पौलुस द्वारा दिए गए अपने उदाहरण को बनाए रखने का आग्रह किया (अध्याय 2)। फिर पौलुस ने तीमुथियुस को दुष्ट लोगों से चौकस रहने (3:1-9) और पौलुस के उदाहरण से अपनी उस अच्छी शिक्षा और पवित्र वचन की रक्षा करने की चेतावनी दी (3:10-17)।

पाठ 8: स्वयं को भ्रष्ट होने से बचाना (3:1-9)

3:1-9 में पौलुस ने ''अंतिम समयों'' के विषय में चेतावनी दी। कुछ लोग ''अंतिम समयों'' को रहस्यमयी शब्द कहते हैं, और अक्सर इसका दुरुपयोग होता है। इस शब्द का इस्तेमाल किसी भी समय के लिए हो सकता है क्योंकि परमेश्वर ने पिन्तेकुस्त के दिन से ही जब कलीसिया शुरू हुई थी (प्रेरितों 2:1, 16, 17), विश्वास से फिर जाने के दिनों तक (1 तीमुथियुस 4:1-3) ठट्ठा करने वालों के आने (2 पतरस 3:3-7), और न्याय के दिन तक के लिए (यूहन्ना 12:48) हमारे साथ ''पुत्र के द्वारा'' बातें की हैं (इब्रानियों 1:1-2)।

तीमुथियुस से कहा गया, ''पर यह जान रख, कि अंतिम दिनों में कठिन समय आएंगे।'' *हमारे लिए यह सबक है कि ये ''कठिन[1] समय'' यही हो सकते हैं।* तीमुथियुस की तरह, हमारे लिए भी यह ''जान''[2] लेना आवश्यक है। पहले ही चेतावनी देना आने वाले

समय की तैयारी करने के लिए होती है। यदि अगली आयतों में पौलुस द्वारा बताई गई बुरी स्थिति हम पर आ जाए, तो हमारा समय बहुत ही बुरा और विनाशकारी होगा। इसलिए पौलुस तीमुथियुस और हमें एक गंभीर चेतावनी दे रहा था!

विवरण (आयतें 1-5)

अंतिम समयों के भ्रष्ट लोगों का विस्तार से वर्णन करने के बाद (3:2-5), पौलुस ने ''ऐसों से परे'' रहने के लिए कहा (3:5)। ''परे'' (यू.: *apotrepo*) का अर्थ है ''दूर होना ... अपने आप को ... से दूर करना।''[3] कैनथ व्यूस्ट ने इसका अनुवाद, ''और इनसे दूर ही रहना चाहिए''[4] किया। यह ''कलीसिया के अनुशासन'' की बात नहीं लगती (जैसे 2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 14, 15; 1 कुरिन्थियों 5:1-5 में)। यह संदर्भ 2 कुरिन्थियों 6:14-7:1 से अधिक मेल खाता है, जहां पौलुस ने भाइयों को अविश्वासियों के साथ मेल रखकर उनके सांसारिक ढंगों को न अपनाने का आग्रह किया (नोट 1 यूहन्ना 2:15-17)। 2 तीमुथियुस 3:2-9 में, पौलुस विशेष रूप से अविश्वासी भाइयों के बारे में नहीं बल्कि आम लोगों (यू.: *anthropoi*) के बारे में लिख रहा था। यदि विश्वासी यहां बताई गई जीवन शैली को अपनाते हैं, तो इससे निश्चित रूप से समस्याएं उत्पन्न होंगी जिनके लिए कलीसिया को अनुशासन बरतना पड़ेगा (देखिए 1 कुरिन्थियों 5:9-13; तीतुस 3:9-11)।

1 कुरिन्थियों 15:33 में पौलुस ने भाइयों को चेतावनी दी: ''धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।'' इसे पौलुस द्वारा दी गई चेतावनी से मिलाएं; हमें अपने मन में यह निश्चय कर लेना चाहिए कि हम इन प्रवृज़ियों या लोगों से मेलजोल नहीं रखेंगे।

काम (आयतें 6-9)

6 से 9 आयतों में वर्णित लोग *अनैतिक आचरण वाले* (3:6) हैं। पौलुस ने लिखा कि वे ''घरों में दबे पांव घुस आते[5] हैं।'' फिर वे ''वश में कर लेते हैं।''[6] वे उन ''छिछोरी स्त्रियों''[7] को वश में करते थे जो ''पापों से दबी''[8] होती थीं। स्पष्टतया यह केवल पौलुस के समय कुछ लोगों के कामों की बात नहीं थी, बल्कि ''हर प्रकार की अभिलाषाओं''[9] वाले जीवन के बारे में कहा गया है। उस वाज़्यांश की परिभाषा के प्रकाश में, इस पर हैरान होने की आवश्यकता नहीं है कि पौलुस ने ''हर प्रकार की अभिलाषाओं'' ज़्यों कहा। हम *अभिलाषाओं* के समुद्र में तैरते हैं! प्रकाशितवाज़्य 2:20-22 में, इजेबेल नामक स्त्री पुरुषों को अभिलाषाओं से ही अपने वश में कर रही थी। रोमियों 1:26, 27 में हम देखते हैं कि वहां पुरुष पुरुषों से कुकर्म करते हैं, परन्तु हमारे समय में तो स्त्रियां स्त्रियों से कुकर्म करती हैं। पाप के मलकुंड में उतरकर बिगड़े हुए लोग हर प्रकार के कामुक ढंग अपनाते हैं!

इन लोगों का आचरण ही अनैतिक नहीं था, बल्कि वे *अध्ययन करने में भी आलसी* थे (जो ''सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहचान तक कभी नहीं पहुंचतीं''; 3:7)। आलस को यहां पर वासना के साथ ''बढ़ने के लिए जानने'' के बजाय ''जानने के लिए जानने'' के आचरण से जोड़ा जा सकता है। लोभ से भरे कारणों से प्रेरित होकर स्वार्थी

कारणों के लिए अध्ययन करना यूहन्ना 7:17, 18 का उल्लंघन है।

वे सच्चाई की नज़र में बहुत ही बुरे थे। इस आचरण को यन्नेस और यज्ब्रेस के स्वभाव से चित्रित किया गया है, जिन्होंने मूसा का विरोध किया था: ''... वैसे ही ये भी सत्य का विरोध करते हैं: ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे विश्वास के विषय में निकज़्मे हैं। पर ... जैसे उनकी अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रकट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएगी'' (2 तीमुथियुस 3:8, 9)।

जिन लोगों का पौलुस ने वर्णन किया है वे दो तरह से दूर होने के दोषी थे। पहली बात तो, उनकी ''बुद्धि भ्रष्ट''[10] हो गई थी। किसी की बुद्धि ही नष्ट हो जाए, तो उसके पास और ज़्या बचेगा! दूसरा, वे ''विश्वास के विषय में निकज़्मे[11]'' थे। विश्वास में बने रहने के लिए इन लोगों का साथी अपने प्रयासों को बेकार ही पाएगा!

इस प्रकार के व्यवहार वाले लोगों को आम तौर पर पसन्द नहीं किया जाएगा, ''ज़्योंकि उनकी मूर्खता सब मनुष्यों पर प्रकट हो जाएगी'' (देखिए गिनती 32:23; 1 कुरिन्थियों 5:1; 1 तीमुथियुस 5:24)।

संक्षेप में

1 से 5 आयतों में दी गई सूची में किसी के चरित्र को नियन्त्रण में रखने वाली अंदरूनी स्थितियों की घोषणा है। परन्तु ये गुण स्थिर नहीं रहेंगे। वे अपने स्वभाव से मिलते – जुलते कार्यों में इकट्ठे हो जाएंगे। पौलुस ने इस बात को पहचाना कि ये स्थितियां कैसे तीन प्रकार के कार्यों में विस्फोटक हो सकती हैं जो आज के लोगों में देखी जा सकती हैं: उनका आचरण अनैतिक है (3:6), अध्ययन करने में आलसी हैं (3:7), सच्चाई में स्थिर नहीं रहते (3:8, 9)।

पाठ 9: अपनी चौकसी करने की सामर्थ (3:10-17)

पौलुस ने अभी – अभी विस्तारपूर्वक चित्र बनाकर समझाया था कि शिक्षा और लोगों में किस प्रकार की अशुद्धता से सावधान रहना है। स्पष्टत: मूसा की तरह तीमुथियुस भी किसी विरोध से बच नहीं सकता था। न हम बच सकते हैं। जैसे तीमुथियुस ने पूछा होगा, वैसे ही हम भी पूछ सकते हैं, ''मसीह की शिक्षा का विरोध करने वाले ऐसे लोगों से हम कैसे 'बच' सकते हैं ?''

पौलुस के आदर्श की सामर्थ (आयतें 10-13)

तीमुथियुस और पौलुस दोनों एक ही आदर्श को ''मानते'' थे। पौलुस ने कहा, ''पर तू ने उपदेश, चालचलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज, और सताए जाने, और दुख उठाने में मेरा साथ दिया ...'' (3:10, 11)।[12] ''उपदेश'' कहकर पौलुस ने संक्षेप में

बताया कि तीमुथियुस ने ज़्या मानना था। उसे दिया गया पौलुस का उपदेश परीक्षा में स्थिर रहना था (देखिए 1 तीमुथियुस 4:16; 2:7; रोमियों 9:1; 2 कुरिन्थियों 2:17)।

हमारे जीवन में उन शिक्षाओं के लागू होने का स्पष्ट प्रमाण पौलुस के ''चाल चलन''[13] में है। लोगों द्वारा किसी की शिक्षा के साथ-साथ उसके कामों को भी करना सीखना कितनी अच्छी बात है! (देखिए प्रेरितों 1:1; 1 कुरिन्थियों 11:1.)

पौलुस का जीवन वैसा ही था जिसकी वह शिक्षा देता था ज़्योंकि यह उसके जीवन की ''मंशा'' (उद्देश्य) थी।[14] पौलुस ने बार-बार दिखाया कि उसका लक्ष्य परमेश्वर द्वारा उसे दिए गए काम को पूरा करना था (2 कुरिन्थियों 5:7-11; गलतियों 1:10-12)। उसके जीवन का लक्ष्य निम्न गुणों से प्राप्त किया जा सकता था!

''विश्वास।'' (देखिए 1:12; 1 तीमुथियुस 1:12, 18, 19; 2 कुरिन्थियों 5:7.) इस विश्वास से उन चीज़ों को देखा जा सकता है जो आंखों से नहीं दिखाई देती हैं, उस पर जो असज़्भावित हो, विजय पाई जा सकती है और उस पर जो मनुष्य के लिए असज़्भव हो भरोसा रखने का साहस किया जा सकता है (इब्रानियों 11:1-3; 1 यूहन्ना 5:4)।

''सहनशीलता।''[15] बहुत से लोग स्वर्ग में इसलिए होंगे ज़्योंकि पौलुस ने अपने भाइयों को नहीं छोड़ा या मसीह के काम के लिए ईश्वरीय सेवा को पूरा करने के लिए उसमें हर प्रकार का कष्ट सहकर भी उसने उससे मुंह नहीं मोड़ा था (फिलिप्पियों 3:7-17)।

''प्रेम।''[16] नये नियम में पाए जाने वाले विभिन्न संदर्भों में इस अद्‌भुत शज़्द की बहुत सी प्रासंगिकताएं हैं। जिस प्रेम की बात पौलुस कर रहा था वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है और कभी टलता नहीं है (1 कुरिन्थियों 13:4-7)। तीमुथियुस के लिए और हमारे लिए यह कितनी बड़ी सामर्थ है!

''धीरज।''[17] यह गुण विश्वास, सहनशीलता और प्रेम का स्वाभाविक फल है! पौलुस ने मसीह के लिए बहुत ''सताव'' और ''दुख''[18] सहे थे। उसके दागों और संघर्षों का अवलोकन करने पर हम उसके बड़े हृदय पर चकित रह जाते हैं:

> (मैं पागल की नाईं कहता हूं) मैं उन से बढ़कर हूं! अधिक परिश्रम करने में; बार बार कैद होने में; कोड़े खाने में; बार - बार मृत्यु के जोखिम में। पांच बार मैं ने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस-उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैं ने बैंतें खाईं; एक बार पत्थरवाह किया गया; तीन बार जहाज़ जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात दिन मैं ने समुद्र में काटा। मैं बार - बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जातिवालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में। परिश्रम और कष्ट में; बार-बार जागते रहने में; भूख-प्यास में; बार बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में। और अन्य बातों को छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है (2 कुरिन्थियों 11:23-28)।

तीमुथियुस के साथ-साथ इनमें हमारे लिए भी ''आगे बढ़ने'' का बड़ा प्रोत्साहन है!

तीमुथियुस जानता था कि पौलुस को कहां-कहां दुख उठाने पड़े थे: ''अंताकिया और इकुनियुम और लुस्त्रा में'' (3:11; प्रेरितों 14:19-21; 16:1-3)। वह तो उस दुख में भी पौलुस के उदाहरण की उपेक्षा नहीं कर सकता था ज़्योंकि पौलुस पर न केवल दुख पड़ा, बल्कि उसने उसे ''उठाया'' भी था।[19] पौलुस तनाव के पहाड़ के नीचे तीमुथियुस और हम में से बहुतों की सहायता के लिए खड़ा था कि हम बुराई के उस बोझ के नीचे न आ जाएं जो हम पर पड़ सकता है (याकूब 1:2-4; 1 पतरस 1:6-9)।

अनुमान लगाने की ज़रूरत नहीं कि पौलुस उस सब को कैसे सह पाया जो उसने सहा। उसने बताया कि ''सहने वाले आत्मा'' ने कैसे काम किया और ''प्रभु ने मुझे उन सब से छुड़ा लिया[20]'' (3:11)।

और समस्याओं की प्रतिज्ञा (3:12) इस सामग्री को लिखने की व्यावहारिकता को सिद्ध करती है। पौलुस के शब्दों में इस प्रतिज्ञा में निश्चितता भी है और व्यापकता भी। ''सब'' सताए जाएंगे (मत्ती 5:10, 11; 24:9-14; प्रेरितों 7:52)। उनके विपरीत जो ''भक्ति का भेष'' तो धारण करते हैं परन्तु उसकी शक्ति का इन्कार करते हैं, ''सब'' ''यीशु में भक्ति के साथ'' जीवन बिताने वालों के लिए कहा गया है (3:5)।

पौलुस ने कहा कि दुख उठाने वाले लोग ''भक्ति के साथ'' रहते हैं। इसके अलावा ''बिताना'' शब्द किसी एक जगह होने वाला शब्द नहीं है। यूनानी शब्द *zao* है[21] जिसमें सजीवता और शक्ति है। इसलिए उसका जीवन समाज को स्वादिष्ट करने के लिए नमक होने और अंधेरे को बिखेरने के लिए प्रकाश होने का साहस है, जहां सच्चाई झूठ को बेनकाब करती है और धर्म का पक्ष लेती है (मत्ती 5:13-16; इफिसियों 5:6-8)। गलत जीवन - शैली मूर्खता और शरीर की कामना की दासता में ले जाती है।

पुरानी कहावत यहां उपयुक्त लगती है: ''मुझसे कहा गया,'' ''हिम्मत रखो! हालात इससे भी बुरे होंगे! सो मैंने हिम्मत की और वैसा ही हुआ!'' इस जीवन में ''दुष्ट[22] लोगों'' (3:13) की कमी कभी नहीं होगी।

दुष्ट लोग ''बहकाने वाले'' होते हैं।[23] ऐसे लोग ''बुरे से और बुरे (अर्थात बद से बदतर) होते जाते हैं।''[24] सचमुच, इस शब्द से पता चलता है कि किसी ने राजमार्ग की ओर जाना चुना है, परन्तु यह राजमार्ग *गलत* है!

ये लोग ''धोखा दे रहे''[25] और ''धोखा खा रहे'' थे। अपनी बोई हुई फसल को काटने का यह एक उत्कृष्ट उदाहरण है (देखिए गलतियों 6:7, 8)। यहां प्रयुक्त कर्तृवाचक कृदंत दिखाता है कि वे धोखा दे रहे थे, जबकि कर्मवाच्य कृदंत दिखाता है कि वे धोखा खा रहे थे, या यूं कहें कि अपनी ही बनाई दवा की *खुराक* ले रहे थे!

इसके परिणाम दो तरह से बुरे थे, ज़्योंकि धोखा खाने वाले और धोखा देने वाले *सब धोखा खा रहे थे।* ऐसा चाल चलन जारी रहना कितना बुरा है, लेकिन पौलुस की भविष्यवाणी कितनी सच्ची है!

अच्छी ट्रेनिंग की सामर्थ (आयतें 14, 15)

''पर'' शब्द (आयत 3:14) से तीमुथियुस को स्पष्ट तौर पर अलग कर दिया गया था। वह दुष्ट या बहकाने वाला नहीं था। उसने धोखा देकर या धोखा खाकर ''बुरे से बुरा'' नहीं होना था। तो फिर तीमुथियुस को ज़्या करना चाहिए था?

आज्ञा

दुष्ट लोगों के विपरीत, पौलुस ने तीमुथियुस को आदेश दिया, कि ''तू इन बातों पर जो तूने सीखी हैं और प्रतीति की थी, ... दृढ़ बना रह।''[26] ये वे बातें थीं जो तीमुथियुस ने पहले अपनी मां और नानी से (1:5) और बाद में पौलुस से सीखी थीं (1:6; 2:1, 2)।

वह आदेश मान्य था ज़्योंकि पौलुस ने उसका कारण भी बताया: ''इन बातों पर जो तू ने सीखी हैं और प्रतीति[27] की थी'' (3:14)। किसी को परमेश्वर से, परमेश्वर के वचन से और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के साथ जोड़ा जाना उसके लिए कितनी बड़ी बात है! हम भी जब उसके काम के लिए दुख उठाते हैं, तो अन्ततः अपनी विजय के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं (इब्रानियों 11:1–12:1; रोमियों 8:31–39)।

आत्मविश्वास

तीमुथियुस के लिए या हमारे लिए भरोसों का आधार ''जानना'' है।[28] ''जानना'' के लिए पौलुस से अच्छा शब्द नहीं लगाया जा सकता।

इस प्रकार का ''जानकर दृढ़'' बनना दो कारणों से बना है:

तीमुथियुस ने प्रमुख शिक्षकों से सीखा था। एक विश्वासी मां और नानी के साथ-साथ प्रेरित पौलुस से अच्छा शिक्षक और कौन हो सकता है (3:14; 1:5, 6; 2:2)?

वह परीक्षा के समय स्थिर रहा था: ''... बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है'' (3:15)। यहां पर फिर वह ठोस यूनानी शब्द *oida* मिलता है। गहराई का यह ज्ञान समय की चुनौतीपूर्ण परीक्षाओं और प्रासंगिकताओं से विकसित हुआ है। हो सकता है कि एक अवसर पर काम करने वाला कोई सिद्धांत या विचार किसी दूसरे अवसर के लिए अपर्याप्त या मूर्खतापूर्ण हो। यदि सही ढंग से लागू किया जाए तो परमेश्वर के वचन में कभी भी चंचलता या असफलता नहीं होती! तीमुथियुस बचपन से ही इस पर निर्भर रहने के कारण इससे बहुत प्रभावित था!

इस प्रकार, तीमुथियुस को *प्रसिद्ध शिक्षकों* द्वारा *प्रसिद्ध सच्चाइयां* सिखाई गई थीं। दोनों में ही उसका पूर्ण विश्वास था। कितने आशीषित हैं वे लोग जो बचपन से ही इन सच्चाइयों को सीखने वाले लगते हैं! परमेश्वर ने ऐसी ही आत्मिक शिक्षा अपने लोगों को भी देनी चाही थी। *ज़्या आप अपने आस - पास के लोगों को उनके बचपन से ही इतनी महान शिक्षा का अनुभव करवाएंगे?*

परिणाम

अच्छा फल ''पवित्र[29] लेखों'' को जानने से मिलता है। पौलुस ने संक्षेप में हमें इसकी

परिभाषा दी है, ''जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है।'' यहां पर पवित्र शास्त्र के पदों को सामर्थी दिखाया गया है जो काम कर ''सकता है।'' इब्रानियों 4:12, 13 कहता है:

> ज़्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ - गांठ, और गूदे - गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है। और सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है बरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के साज़्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं।

ध्यान दें कि उनका फल ज़्या हो सकता है: वे आपको ''बुद्धि देती'' हैं।[30] इस बुद्धि का सज़्बन्ध अंतिम परिणाम से है। पवित्र लेखों से मनुष्य को ''उद्धार के लिए'' अगुआई मिलती है।[31] पवित्र शास्त्र हमारा आत्मिक स्वास्थ्य लौटाकर हमें अनन्त मृत्यु से बचाता है! लोग थोड़ा सा लाभ पाने के लिए कितनी ज्यादा कीमत चुकाते हैं ? मनुष्य को परमेश्वर के पवित्र लेखों में पाए जाने वाले उन विशाल भण्डारों को पहचानना चाहिए। गीत लेखक एल. ओ. सैंडरसन के इन शज़्दों के साथ एक लज़्बी सांस लीजिए:

> बहुमूल्य ईश्वरीय पुस्तक[32]
> परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई यह ईश्वरीय पुस्तक कितनी बहुमूल्य है!
> इसकी विधियां मेरी आत्मा को स्वर्ग में ले जाने के लिए ज्योति की तरह चमकती हैं।
> यह ज्योति, जीवन की सारी अंधेरी रात में, मुझे रास्ता दिखाएगी,
> जब तक मैं उस अनन्त दिन के प्रकाश को न देख लूं।
> पवित्र बाइबल, हे ईश्वरीय पुस्तक! तू मेरा बहुमूल्य भण्डार है!
> मेरे पांव के लिए दीपक और मुझे घर तक पहुंचाने के लिए मार्ग दिखाने वाली ज्योति है।

बाइबल के द्वारा उपलज़्ध करवाई गई संभावनाओं से अवगत होकर हमें उस ईश्वरीय योजना अर्थात ''विश्वास'' के अनुसार चलने की सच्ची इच्छा करनी चाहिए। बहुत सी आशिषें ''विश्वास के द्वारा'' मिलती हैं (देखिए इफिसियों 2:8; गलातियों 3:26, 27; कुलुस्सियों 2:12; फिलिप्पियों 3:9; इब्रानियों 6:12; 11:3, 11, 28, 33, 39; 1 पतरस 1:3-5)।

वह योजना मसीह के द्वारा काम करती है और हमें उस ''में'' छोड़ देती है। वह ''मार्ग, और सत्य और जीवन'' है (यूहन्ना 14:6; प्रेरितों 4:12; इफिसियों 1:3-14)। उसके बिना हम कुछ नहीं हैं, लेकिन उसके द्वारा हम वह सब कुछ कर सकते हैं जो परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम करें। उद्धार के लिए मनुष्य की प्रक्रिया विश्वास और मसीह की आज्ञा मानने और उसकी आज्ञाओं के द्वारा ही है (यूहन्ना 3:16; मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों

22:16; इब्रानियों 5:8, 9), ज़्योंकि मसीह परमेश्वर की ओर से मनुष्य के लिए किया गया प्रबंध है (1 यूहन्ना 2:1, 2; 4:14)।

पवित्र शास्त्र की सामर्थ (आयतें 16, 17)

3:16, 17 में पवित्र शास्त्र को दी गई तीन अद्भुत भेंटों से हमारे मन धन्यवाद से दीन होकर लक्ष्य की ओर लग जाने चाहिए।

पवित्र शास्त्र परमेश्वर की ओर से है

हमें यह याद रखना चाहिए कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की ओर से दिया गया है। पौलुस कहता है कि ''हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा[33] से रचा गया है'' (3:16; देखिए 2 पतरस 1:20, 21; इफिसियों 3:3-5)। पवित्र शास्त्र किसी मनुष्य की खोज या शिक्षा नहीं है। न ही वह किसी कलीसिया के दस्तावेज़ या कॉन्फ्रेंस (सभा) का निर्णय है। पवित्र शास्त्र *परमेश्वर की ओर से दिया गया है।* उसे परमेश्वर ने दिया और उसकी सच्चाई आकाश और पृथ्वी के टल जाने के बाद भी (मत्ती 24:35; यूहन्ना 12:48; यशायाह 55:8-11) बनी रहेगी (देखिए 2:19)। न तो कोई सिनड और न कोई शिक्षा पवित्र शास्त्र को ''परमेश्वर की रचना'' बना सकती है! इसे परमेश्वर ने ही रचा है!

पवित्र शास्त्र एक दान है

परमेश्वर का वचन एक बहुमूल्य उपहार है ज़्योंकि यह ''लाभदायक'' है।[34] अपने बारे में बाइबल का यह दावा अवश्य ही ऐसा वाज़्य है जिसे अल्पवज़्तव्य माना जाना चाहिए। मनुष्य की आवश्यकताओं (रोमियों 3:23) और छुटकारे की परमेश्वर की योजना पर विचार करने पर (इफिसियों 2:1-8), सुसमाचार के संदेश की महानता को व्यज़्त करने के लिए ये शज़्द सचमुच ही कम हैं। पवित्र शास्त्र लाभदायक भी है और सज़्पूर्ण भी। उससे हमें चार विलक्षण ढंगों से लाभ मिलता है:

1. परमेश्वर का वचन *दिशा* प्रदान करता है ज़्योंकि यह ''शिक्षा'' के लिए लाभदायक है। हमारा छुटकारा ''मनुष्य'' और ''योजना'' अर्थात व्यज़्ति और उसके आचरणों की ओर होता है (प्रेरितों 4:12; यूहन्ना 8:31, 32; 2 यूहन्ना 9; रोमियों 1:16, 17)।

मनुष्य नहीं जानता कि वह अपने ही कदमों को किस तरफ ले जाए (यिर्मयाह 10:23)। ऐसा भी मार्ग है जो मनुष्य को तो उचित लगता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु का मार्ग है (नीतिवचन 14:12)। स्पष्टत: हमें अपनी अगुआई के लिए पवित्र शास्त्र की शिक्षा की ही आवश्यकता है!

2. पवित्र शास्त्र हमें *समझाने* के लिए भी लाभदायक है।[35] गलतियों में सुधार आवश्यक है, वरना क्रूस एक मज़ाक बनकर रह जाता है (याकूब 1:21-25; 1 यूहन्ना 2:1, 2)। बाइबल हमारी गलती को सामने लाने और हमें बुरे मार्ग से मुड़ने के लिए समझाने का एक औज़ार है (इब्रानियों 4:12, 13; रोमियों 7:7; तीतुस 1:9, 10)।

किसी ने परमेश्वर के वचन के लिए कहा है: ''जब भी मैं इसे पढ़ता हूं या तो यह पाप को मारता है या मुझे उससे लड़ने के लिए सामर्थ मिलती है।'' पवित्र शास्त्र हमें अपने जीवन भले उद्देश्यों के लिए देने की बात बताकर हमारे पाप और अपनी निर्बलताओं को दिखाता है।

3. पवित्र शास्त्र हमारे *सुधार* या ''अनुशासन'' के लिए भी अच्छा है।[36] पवित्र शास्त्र हमें पाप के विषय में कायल करके भलाई के काम करने के मार्गदर्शन से अपने में सुधार के लिए कहता है (देखिए 1 पतरस 1:22–2:2)। प्रभु अनुशासित करने का साहस करता है और उसका वचन साहुल (आमोस 7:7, 8) अर्थात हर मुद्दे को सुलझाने के लिए मापदण्ड है (2 यूहन्ना 9)।

4. पवित्र शास्त्र *बढ़ने* के लिए लाभदायक है ज़्योंकि उससे ''धर्म की शिक्षा[37]'' मिलती है। हम आसानी से समझ सकते हैं कि इस शज़्द में ''बताने'' से कहीं अधिक है। इसमें *शिक्षा* देना और उस शिक्षा में वह पूरी प्रक्रिया शामिल है जिससे किसी को आकार देकर परिपज़्व बनाया जाता है। यहां पर परिपज़्वता ''धार्मिकता'' को कहा गया है।[38] पवित्र शास्त्र हमें पाप से पवित्र लोगों तक, चंचल बुद्धि से विश्वास तक, बुराई के जीवन की ओर जाने से ईश्वरीय स्वभाव को अपनाने में अगुआई करता है! *सच्चाई कैसी अद्‌भुत वाहक और कैसी बदल डालने वाली सामर्थ है!*

पवित्र शास्त्र का लक्ष्य

पवित्र शास्त्र का लक्ष्य है कि ''परमेश्वर का जन सिद्ध बने[39]'' (3:17)। ''हर एक ज़ले काम'' से जोड़ने पर यह कितनी बड़ी चनौती बन जाती है (देखिए मज़ी 5:16; इफिसियों 2:10; तीतुस 2:11–14)।

कौन इस चुनौती के सामने ठहर सकता है? *हम में से तो कोई नहीं!* परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमारी सामर्थ *उसकी ओर से* है (इफिसियों 6:10–13), और वह हमारे साथ और हमारे अंदर काम करता है (1 कुरिन्थियों 3:9; 2 कुरिन्थियों 3:5; 9:8–11; फिलिप्पियों 2:12–16, विशेषकर आयत 13; 2 तीमुथियुस 2:1)। मनुष्य के लिए आवश्यक सामग्री हमने नहीं दी, बल्कि यह हमें ''दी गई'' है![40]

परमेश्वर अपना सारा अनुग्रह दे देता है ताकि हम उसके शुभसमाचार के साथ बढ़ सकें और हर भले काम में सक्रिय होकर उसके साथ चल सकें।

ज़्या तीमुथियुस के नाम अपनी पहली पत्री में पौलुस ने यही निष्कर्ष नहीं निकाला था (1 तीमुथियुस 4:16)?

संक्षेप में

इस अध्याय का उपयुज़्त सार रोनल्ड वार्ड द्वारा दिया गया है:

> पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है और लाभदायक है, *ताकि परमेश्वर का जन,* चाहे वह किसी भी स्थिति में कोई भी हो *सिद्ध बन सके।* यह

सिद्धांत तीमुथियुस पर और *परमेश्वर के* किसी भी दूसरे *जन* पर लागू होता है। *सिद्ध* से हमें उसके निजी तौर पर पूर्ण होना नहीं बल्कि यह मानना चाहिए कि उसमें सेवकाई के लिए किसी विशेष योग्यता की कमी न हो। उद्देश्य यह है कि उसे मिलने वाले दायित्व को पूरा करने के लिए उसे स्वीकार किया जा सके। यदि उसने अपने आप को पवित्र शास्त्र से भिगो लिया है, तो वह धार्मिक है।[41]

यदि इससे परमेश्वर का जन सिद्ध हो जाता है, तो अध्याय 4 क्रूस के हर सिपाही के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती रखता है!

''अन्त के दिनों में'' पौलुस ने जिन लोगों से सावधान रहने को कहा (2 तीमुथियुस 3:2-5)

''**अपस्वार्थी**'' (यू.: *philautos*)- स्वार्थी; अपने ही हितों को पूरा करने में लीन (T, 653)। आश्चर्य की बात नहीं कि बुराइयों की सूची में यह सबसे पहले आता है। बहुत से शैतानी काम किसी के अपने हित, स्वार्थी लालसाओं और इच्छाओं के कारण ही उठते हैं।

''**लोभी**'' (यू.: *philarguros*)- लालची (R, 762) जबकि ''संतोष सहित भज्ति बड़ी कमाई है'' (1 तीमु. 6:6), जो लोग पहली प्राथमिकता धन को देते हैं वे अपनी स्वतन्त्रता, तर्क, पवित्रता, विश्वास और शांति और अन्ततः अपने प्राणों को खो देते हैं।

''**डींगमार**'' (यू.: *alazon*)- केवल झूठा दावा करने वाला (T, 25)। स्वार्थी व्यज्ति अपने आप ही एक शेखीबाज आदमी होता है।

''**अभिमानी**'' (यू.: *huperephanos*)- अहंकारी, दूसरों को तुच्छ जानने वाले या उनके साथ अपमानजनक व्यवहार करने वाले (T, 641)। घमण्ड ही है जो दूसरों के विरुद्ध उन्हें आहत करने की प्रतिक्रिया के लिए अपने आपसे आगे बढ़ जाता है।

''**निंदक**'' (यू.: *blasphemos*)- निन्दा करने वाले (T, 103)। जब दूसरे किसी घमण्डी व्यज्ति के विरुद्ध प्रतिक्रिया करते हैं (जैसे वे आम तौर पर करते हैं), निन्दक के रूप में काम करते हुए, ''न्यायोचित'' ठहराना।

''**माता-पिता की आज्ञा टालने वाले**'' (''अवज्ञाकार''= यू.: *apeithes*)- समझाने के अयोग्य, (T, 55)। माता-पिता यत्न तो कर सकते हैं, परन्तु अवज्ञाकारी बच्चा उनकी मानेगा नहीं। कुछ लोग जीवन में आरज़्भ में ही शैतान के साथ व्यवहार करना आरज़्भ कर देते हैं।

''**कृतघ्न**'' (यू.: *acharistos*)- अभार न मानने वाला (T, 90)। हमें आशीष देने वालों और हमारी देखभाल करने वालों का अन्धापन हमेशा परमेश्वर और मनुष्य के साथ बुरे सज़्बन्धों का कारण रहा है।

''**अपवित्र**'' (यू.: *anosios*)- पापपूर्ण, दुष्ट (T, 49)। ऐसे व्यज़्ति के लिए कोई भी और कुछ भी पवित्र नहीं है! वह परमेश्वर का अपमान करता और उसे तुच्छ जानता है।

''**दया रहित**'' (यू.: *astorgos*)- बिना पारिवारिक मोह आत्मीय प्रेम के (AS, 65)। जहां प्रेम बढ़ना चाहिए था वहां उसकी उपेक्षा हुई और ठुकराया गया।

''**क्षमा रहित**'' (यू.: *aspondos*)- किसी वाचा में प्रवेश कराने के लिए मनाया नहीं जा सकता (T, 81)। यहां ऐसा व्यज़्ति है जिसे न तो तुष्ट किया जा सकता है और न संतुष्ट। उसके साथ कोई समझौता या कार्य की योजना बनाने का कोई ढंग नहीं। वह इतना स्वार्थी और हठधर्मी है कि कोई भी सज़्बन्ध चाहे वह मानवीय हो या ईश्वरीय उसके कारण खत्म ही हो जाएगा।

''**दोष लगाने वाले**'' (यू.: *diabolos*)- बदनामी करने का आदी... जिन लोगों का मन व इच्छा शैतान से मिलती जुलती है, विचार और कार्य में शैतान पर निर्भर हैं, और उसी के द्वारा उकसाए और चलाए जाते हैं (T, 135)। कभी न कभी ऐसे बदनामी करने वाले लोग उन लोगों को धोखा देते हैं जो उन पर भरोसा रखकर अपनी समस्याएं बताते हैं।

''**असंयमी**'' (यू.: *akrates*)- शज़्तिहीन... एक नैतिक अर्थ में, आत्मनियन्त्रण की कमी वाला (AS, 18)। अपने ऊपर काबू न रख पाने के कारण ऐसे लोगों को अपनी स्थितियां (और प्राण) वश से बाहर जाते मिलेंगे। एक पाप दूसरे पाप को जन्म देता है।

''**कठोर**'' (यू.: *anemeros*)- निर्जीव नहीं बल्कि निर्दय या क्रूर (T, 45)। यह पहले सभी शैतानी कार्यों का चरम है। हाय ऐसे लोगों पर जो इन अत्याचारियों के साथ व्यवहार करते हैं।

''**भले के बैरी**'' (यू.: *aphilagathos*)- भलाई और भले लोगों का विरोध करने वाले; केवल 2 तीमु. 3:3 में ही मिलते हैं (T, 89)। मसीह की सारी भलाई और ईश्वरीयता के कारण ही वह नीच लोगों द्वारा क्रूस पर चढ़ाया गया।

''**विश्वासघाती**'' (यू.: *prodotes*)- देशद्रोही (T, 538)। आज नहीं तो कल ऐसे लोग उन्हें जो उनके सबसे प्रिय हैं बेचकर छोड़ देंगे।

''**ढीठ**'' (यू.: *propetes*)- आगे की ओर गिरना, बिना सोच विचार... अविवेकी (T, 541)। अविश्वासियों के विनाश की ओर जाने के कारण युज़्तिसंगत उज़र छोड़े जा सकते हैं।

''**घमण्डी**'' (यू.: *tuphoo*)- घमण्ड से अंधे होना, मूर्खतापूर्ण काम करना (T, 633)। ऐसा अंधापन आघात और शोक का कारण बनता है।

''**सुख विलास के चाहने वाले**'' (यू.: *philedonos*)- भोग विलास में लिप्त (AG, 867)। इन लोगों ने परमेश्वर के बजाय गलत भोग विलास को प्रिय जानकर गलत प्राथमिकता चुनी हैं।

''**भज़्ति का भेष धारणे वाले**'' **पर** ''**इसकी शज़्ति को नहीं मानते**'' (''भेष''= यू.: *morphosis*)- भज़्ति का केवल बाहरी रूप या सादृश्य (T, 419)। विश्वास के बिना भेष बदलना एक धोखा है। ऐसा व्यज़्ति भज़्ति का भेष तो धारता है पर सच्ची भज़्ति की सामर्थ का इन्कार करता है।

AG वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक- इंग्लिश लैक्ज़िकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ़ अर्ड्ट एण्ड एफ़ विल्बर गिंगरिक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957)।

AS जी. एबट-स्मिथ, *ए मैनुअल ग्रीक लैक्ज़िकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1948)।

R एडवर्ड रोबिन्सन *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लैक्ज़िकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863)।

T सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिज़्म, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्ज़िकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर (एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड, टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क., ग्रैंट रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977)।

पाद टिप्पणियां

[1]कठिन (यू.: *chalepos*) ''करना, लेना कठिन होना ... सहना कठिन होना, दुखदायी, खतरनाक ... 2 तीमु. 3:1, कठोर, भयंकर, जंगली ... मज़ी 8:28'' (सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिज़्म, *ए ग्रीक - इंग्लिश लैक्ज़िकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट,* अनु. व संशो. जोसेफ़ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1901; रीप्रिंट एडि. ग्रैंड रैपिड्स मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 664)। [2]जान (यू.: *ginoske*) - ''जानना, समझना ... निश्चय जानना, बाहरी प्रभावों की आंशका में अन्तर करना, जो व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित ज्ञान है'' (थेयर, 117-18)। [3]थेयर, 69. [4]कैनथ एस. वुअस्ट, *वुअस्ट'स वर्ड स्टडी,* अंक 2, *पास्टरल एपिस्टल्स* (ग्रैंड रैपिड्स मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं. 1952), 145. [5]घुस आते (यू.: *enduno*) - ''[मूलत:] घरों में आने का बहाना ढूंढ़ लेते हैं, 2 तीमु. 3:6'' (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक - इंग्लिश लैक्ज़िकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट एण्ड द अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ़. अर्ड्ट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957], 263); ''अपने आप को छिपाना, ... चुपके से आना, चुप - चाप जगह बनाना; घुसना'' (थेयर, 214)। [6]वश में कर लेना (यू.: *aichmalotizo*)- ''फंसा लेना ... अपने नियन्त्रण में करना ... किसी के दिलोदिमाग़ पर छा जाना ... 2 तीमु. 3:6'' (थेयर, 18)। [7]छिछोरी स्त्री (यू.: *gunaikarion*) - ''कहने - सुनने से बाहर, एक अशज़्त मूर्ख स्त्री, 2 तीमु. 3:6'' (एडवर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लैक्ज़िकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 154); ''... तुच्छ, परन्तु [अपमानजनक गुणों वाली], बेकार, मूर्ख स्त्री'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 167)। [8]दबा (यू.: *sesoreumena*) - ''लादना ... 2 तीमु. 3:6, लदा, बोझ से दबा'' (रोबिंसन, 705); ''अपने पापों के बोझ से दबी मूर्ख स्त्रियों पर बोझ लादना ... के साथ (जगह) भरना'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 808)। [9]अभिलाषाएं (यू.: *epithumai*) - ''तीव्र इच्छा, लालसा ... नियम विरुद्ध और अमर्यादित इच्छा, भूख, कामेच्छा ... कुलु. 3:5 ... शारीरिक इच्छाओं को संतुष्ट करना, 1 तीमु. 6:9; 2 तीमु. 3:6; 4:3; तीतु. 3:3; याकूब 1:14, 15 ... शारीरिक वस्तुओं पर टिकी इच्छाएं, जैसे भोग विलास, लाभ, आदर ... कपटपूर्ण अभिलाषायें, इफि. 4:22 ... जवानी की अभिलाषाएं, 2 तीमु. 2:22 ... जिसे अपवित्र, व्यभिचारी इच्छा कहा जाता है, रोमि. 1:24; 1 थिस्स. 4:5'' (रोबिन्सन, 279)। [10]बुद्धि भ्रष्ट (यू.: *kataphtheiro*) - ''बिगड़ जाना, पूरी तरह से, भ्रष्ट होना ... निकज़्मे होना ... चरित्र भ्रष्ट होना ... 2 तीमु. 3:8 ... नाश करना ..., 2 पत. 2:12'' (रोबिंसन, 390)।

[11]निकज़्मे (यू.: *adokimos*) - ''स्वीकृत नहीं, ठुकराया हुआ, ... दण्ड, दुश्चरित्र के योग्य, रोमि. 1:28; 2 तीमु. 3:8 ... अस्वीकृत ... अयोग्य ... व्यर्थ'' (रोबिंसन, 14); ''... परीक्षा में न ठहरने वाला ... अपने आप को वैसा सिद्ध नहीं करता जैसा इसे होना चाहिए ... 1 कुरिं. 9:27; 2 कुरिं 13:5-7 ... कुछ करने

के अयोग्य ... तीतु. 1:16'' (थेयर, 12)। [12]''साथ लिया'' के लिए यूनानी शब्द *parakoloutheo* का अर्थ ''जांचने के लिए ... साथ - साथ रहना, या पीछे - पीछे रहना'' और ''के अनुरूप होना'' या दोनों हो सकता है (रोबिंसन, 550)। [13]चाल चलन (यू.: *alole*) - ''चाल चलन, शिक्षा, ट्रेनिंग, अनुशासन में रहकर अगुआई करने वाला जीवन, ढंग या जीवन शैली ... 2 तीमु. 3:10'' (थेयर, 10)। [14]मनसा (यू.: *prothesis*) - ''प्रस्तुति ... योजना, उद्देश्य, निश्चय, इच्छा बताना, बल लगाना ... 2 तीमु. 3:10 ... सोचने का ढंग ... मन का उद्देश्य ... प्रेरितों 11:23 ... ईश्वरीय उद्देश्य का ... जो अनन्त उद्देश्य के अनुसार, इफि. 3:11 ... उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए हैं, रोमि. 8:28'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 713)। [15]सहनशीलता (यू.: *makrothumia*) - ''कठिनाइयां और बुराइयां सहने में दिखाई गई सहनशक्ति, एकनिष्ठा दृढ़ प्रयत्न, ... कुलु. 1:11; 2 तीमु. 3:10; इब्रा. 6:12; याकूब 5:10 ...'' (थेयर, 387)। [16]प्रेम (यू.: *agape*) - ''स्नेह, सद्भाव, ... परोपकार ... प्रेम से ली गई कष्टदायक सेवा, परिश्रम, 1 थिस्स. 1:3 ... सच्चाई को गले लगाने वाला प्रेम, 2 थिस्स. 2:10'' (थेयर, 4)। [17]धीरज (यू.: *hupomone*) - ''सहनशीलता, निष्ठा, धैर्य ... नये नियम में मनुष्य का गुण जिसका उसके उद्देश्य और विश्वास और भक्ति के प्रति कष्ट और परीक्षाएं सहकर भी वफ़ादारी में कोई जवाब नहीं है: लूका 8:15; 21:19; रोमि. 5:3 ... 2 थिस्स. 1:4; 1 तीमु. 6:11; 2 तीमु. 3:10; तीतु. 2:2'' (थेयर, 644)। [18]दुख (यू.: *pathema*) - ''विपत्ति, संकट, कष्ट ... रोमि. 8:18; 2 कुरिं. 1:7 ...; कुलु. 1:24; 2 तीमु. 3:11; इब्रा. 2:10; 10:32 ...'' (थेयर, 472)। [19]उठाना (यू.: *hupophero*) - ''सहना, ... नीचे से उठाना, समर्थन देना, सहारा देना; ... 1 कुरिं. 10:13 ... 2 तीमु. 3:11 ... 1 पत. 2:19'' (रोबिंसन 752)। [20]छुड़ाना (यू.: *errusato*) - पौलुस को छुड़ाने के बाद प्रभु ने स्वयं इसकी ओर देखा। *सचमुच, प्रभु अपने लोगों का ध्यान रखता है* (1 कुरिन्थियों 10:13; 2 तीमुथियुस 4:16-18)। प्रभु हमें छुड़ाकर हम पर नज़र रखता है, ''बचाने के लिए ... खतरे से निकालना या खींचना ... 2 पत. 2:7 ... रोमि. 11:26 ... 5:31; 1 थिस्स. 1:10 ... 2 तीमु. 4:18 ... कुलु. 1:13; 2 तीमु. 3:11'' (रोबिंसन, 650)।

[21]रहते (यू.: *zao*) - रहने और बढ़ने के अर्थ में ... जीवित रहना, 2 कुरिं. 6:9; 1 थिस्सलु. 3:8 ... उसे जीवन समर्पित करने व पवित्र करने के लिए परमेश्वर के राज्य में बहाल ... सक्रिय, आशीषित, अंतर्हित होना; ताकि जीवन का लाभ किसी को या उसके कार्य के लिए हो, 20:38; रोमि. 6:10 ... गला. 2:19 ... 2 कुरिं. 5:15 ... 1 पत. 2:24 (थेयर, 269-70)। [22]दुष्ट (यू.: *poneros*) - ''काम... शारीरिक ज़्लेश से भरे होना ... काम ... छेड़छाड़, संदेहों से दबे और घबराए होना। इफि. 5:16; 6:13 ... शारीरिक अर्थ में ... बीमार या अंधे की बुरी स्थितियां, मज़ी 6:23; लूका 9:34 ... जाति सज़्बन्धी अर्थ में, दुष्ट, बुरा, अधर्मी ... मज़ी 7:11; 12:34 ... 2 तीमु. 3:13 ... शैतान का... मज़ी 5:37; 6:13; 12:19, 38 ... 1 यू. 2:13 ...; 3:12'' (थेयर, 530-31)। [23]बहकाने वाला (यू.: *goes*) - ''जादूगर, बाज़ीगर ... ठगने वाला, धोखेबाज़ ... 2 तीमु. 3:13'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 163-64); ''... विलाप करने वाला, गुर्राने वाला ... जादू करने वाला, धोखेबाज़, पाखंडी'' (थेयर, 120)। [24]बुरे से बुरा होते जाना (यू.: *prokopto*) - ''... मारना या आगे चलाना, ... उन्नति करना, ... बढ़ना ... आगे जाना, 2 तीमु. 2:16; 3:9 ..., रोमि. 13:12'' (रोबिन्सन, 621); ''... दूर निकल जाना ... बद से बदतर होना, 2 तीमु. 3:13'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 714-15)। [25]धोखा देना (यू.: *plano*) - ''गुमराह करना, भटकना ... किसी को सही मार्ग से भटकाना ... व्यवस्था. 6:1 ... गुमराह होना ... इधर उधर भटकना ... चज़्कर में पड़ना'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 671); ''गलती करवाना ... गलत निर्णय लेना मज़ी 24:4, 5, 11, 24 ... सत्पथ से डिगाना ... यूहन्ना 7:12 ... प्रकाशित. 20:8, 10'' (रोबिन्सन, 586)। [26]बना रहना (यू.: *mene*) - वर्तमान काल का अर्थ है कि तीमुथियुस अपनी वर्तमान दौड़ में बना रहे (जो बातें उसने सीखी हैं) और आदेशसूचक का अर्थ है कि तीमुथियुस को उस मार्ग पर चलते रहना *चाहिए* या ''बने रहना'' *चाहिए* (यू.: *meno*) - ''बने रहना, स्थिर रहना ... किसी में अर्थात उसकी सामर्थ में बने रहना, प्रेरितों 5:4 ... 1 कुरिं. 7:11 ... 2 तीमु. 2:13 ... बना रहता, सह लेता, ...1 कुरिं. 15:6 आगे बढ़ते रहने के लिए, सदा तक रहता ... 1 कुरिं. 13:13 ... इब्रा. 13:1 ... स्थिर बने रहना, दृढ़तापूर्वक लगा रहना ... यूहन्ना 8:31'' (रोबिन्सन, 452-53)। [27]प्रतीति की (यू.: *epistothes*) -

कर्मवाच्य दिखाता है कि तीमुथियुस ने बाहर से सहायता पाई थी, और उसे मिली थी! उसने इसे कितनी अच्छी तरह से पाया था यह पता ''आश्वस्त'' शब्द के स्वभाव में चलता है। मूल शब्द *pistoo* का अर्थ ''विश्वासयोग्य, विश्वसनीय बनाना ... अपने आप को बांधना ... मानने के लिए आश्वस्त होना है, 2 तीमु. 3:14'' (रोबिन्सन, 586); ''... दृढ़ करना, स्थापित करना, 1 इति. 17:14 ... दृढ़ता से मान लेना'' (थेयर, 514)।[28]जानना (यू.: *oida*) - ''किसी के बारे में जानना ... से (अच्छी तरह) मेल जोल होना, निकट सम्बन्ध बनना ... 2 कुरिं. 5:16 ... परमेश्वर को जानना, उसके अस्तित्व को किताबों से नहीं बल्कि निजी तौर पर उसके साथ सकारात्मक सम्बन्ध से ... 2 थिस्स. 1:8; तीतु. 1:16 ... जानना या समझना ... आप व्याख्या करना जानने के लिए समझते हैं। ... फिलि. 4:12; 1 थिस्स. 4:4 ... इफि. 1:18 ... विशेषतया मनुष्यों के विचारों को जानने की यीशु की योग्यता ... मत्ती 12:25 ... मर. 12:15'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 558-59); ''*Eido* ज्ञान इन्द्रियों से समझ लेना ... ध्यान लगाना ... समीक्षा करना ... अनुभव करना ... समझना ... जानना कि योग्य कैसे होते हैं ... जानना और अनुमोदन करना ... सम्भाल करना, में दिलचस्पी लेना, 1 थिस्स. 5:12 ... नीति. 27:23 ... गला. 4:8'' (रोबिन्सन, 208-10)।[29]पवित्र (यू.: *ieros*) - ''परमेश्वर के लिए अलग किया हुआ ... परमेश्वर को दिया हुआ ... 2 तीमु. 3:15 ... पवित्र शास्त्र ... पवित्र वस्तुएं ... 1 कुरिं. 9:13'' (रोबिन्सन, 346); ''... पवित्र शास्त्र, क्योंकि परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है इसलिए, ईश्वरीय बातों के साथ व्यवहार और उन्हें श्रद्धापूर्वक मानना'' (थेयर, 299)।[30]बुद्धि (यू.: *sophizo*) - ''बुद्धिमान बनाना, सिखाना, समझाना ... चतुराई या चालाकी से योजना बनाना'' (थेयर, 582); ''ईश्वरीय बातों के सम्बन्ध में, प्रकाश करने के लिए ... निपुण, विद्वान बनाना ... 2 तीमु. 3:15 ... कुशलता और कारीगरी से योजना बनाना'' (रोबिन्सन, 670)।

[31]उद्धार (यू.: *sozo*) - ''हानि से बचाए रखना, सम्भालना, बचाना, ... सुरक्षित लाना ... स्वस्थ होना, अच्छा होना, तन्दुरुस्त होना, बढ़ना ... अनन्त मृत्यु से उद्धार या बचना, 1 कुरिं. 1:21; 2 तीमु. 1:9; तीतु. 3:5 ... 1 तीमु. 1:15; 2 तीमु. 4:18 ... मत्ती 1:21'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 805-6)।[32]एल. ओ. सैंडरसन, ''द प्रेशियस बुक डिवाइन।'' कॉपीराइट, 1963, नवीकरण। मालिक, लियोन बी. सैंडरसन। अनुमति लेकर छापा गया। [33]परमेश्वर की प्रेरणा से (यू.: *theopneustos*) - ''... परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त, परमेश्वर के सांस से, 2 तीमु. 3:16'' (रोबिन्सन, 333)।[34]लाभदायक (यू.: *ophelimos*) - ''सहायक ... उपयोगी ... 1 तीमु. 4:8 ... 2 तीमु. 3:16 ... तीतु. 3:8'' (रोबिन्सन, 803)।[35]समझाना (यू.: *elegmos*) - ''किसी पापी को समझाना (गिनती 5:18 से), सुधारना ... और दण्ड देना भी ... 2 तीमु. 3:16'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 248)।[36]सुधारना (यू.: *epanorthosis*) - ''फिर से सुधारना ... वापस लाना ... हृदय और जीवन का सुधार, 2 तीमु. 3:16'' (रोबिन्सन, 267)।[37]शिक्षा (यू.: *paideia*) - बच्चे का प्रशिक्षण ... पढ़ाई, अनुशासन, हिदायत जिसमें शिक्षा, सुधार, पुरस्कार व दण्ड शामिल हो ... ऐसी शिक्षा जो प्रभु द्वारा स्वीकार हो और वह उसकी मांग करता हो, 2 तीमु. 3:16'' (रोबिन्सन, 539)।[38]धार्मिकता (यू.: *dikaiosune*) - जो सही और ठीक हो वह करना या होना ... न्याय, स्वभाव की बराबरी, निष्पक्षता ... न्यासंगत होना, धर्मी होना ... जो उपयुक्त, सही हो वह होना ... इफि. 5:9; 1 तीमु. 6:11; 2 तीमु. 2:22 ... दयालुता, उपकार, उदारता में दिखाया जाना, 2 कुरिं. 9:9, 10 ... जहां परमेश्वर के साथ मन सीधा हो, परमेश्वर के प्रति पवित्रता हो ... रोमि. 6:16, 18 ... परमेश्वर की (ओर से) धार्मिकता, जो मसीह में विश्वास (के द्वारा) मिलती है ... फिलि. 3:9 ... 1 कुरिं. 1:30'' (रोबिन्सन, 184)।[39]सिद्ध (यू.: *artios*) - ''अपनी तरह का सिद्ध होना; ऐसा धार्मिक शिक्षक बनना जिसमें कोई कमी न हो'' (रोबिन्सन, 96); ''हर आवश्यकता को पूरा करने के योग्य = सुयोग्य, निपुण'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 110)।[40]दिया जाना (यू.: *exertismenos*) - ''पूरी तरह से पूर्ण करना, तैयार करना ... पूरी तरह से तैयार करना'' (रोबिन्सन, 259)। कर्मवाच्य प्रमाणित करता है कि यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम अपने आप करते हैं, बल्कि परमेश्वर के प्रति और उसके वचन के प्रति कोई समर्पण है जिससे *वे* हमें अपने आप से आगे बढ़कर करने के योग्य बनाते हैं (2 कुरिन्थियों 8:1-7, विशेषतया आयत 3; रोमियों 12:2 भी देखिए जहां ''नया हो जाना'' कर्मवाच्य भी है)। परमेश्वर हमें ''कम बदलता'' नहीं है।

[41]रोनल्ड ए. वार्ड, *कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (वैको, टैक्स.: वर्ड बुक्स, 1974), 201.